लगाने के बाद की अवधि में आमतौर पर ऊंचा रहा। इन बातों को देखते हुये यह कहना सही नहीं होगा कि फरवरी, 1977 में आलू के निर्यात पर रोक लगाने के फलस्वरूप कीमतों में गिरावट का रुख रहा तथा उससे आलू उगाने वालों को निराशा पैदा हुई।

(ख) आलू के निर्यातों पर रोक हटाने के प्रश्न पर फसल की सम्भावना और कीमतों के रुख को ध्यान में रखते हुये उपयुक्त समय पर विचार किया जाएगा।

(ग) सम्बन्धित अवधि में मूल्य की दृष्टि से आलू के निर्यात निम्नांकन प्रकार रहे :—

| वर्ष | मूल्य (लाख रुपए में) |
|---|---|
| 1974–75 | 68.66 |
| 1975–76 | 348.17 |
| 1976–77 | 585.15 |

**Decision to export smaller quantity of Sugar**

2334. SHRI S. R DAMANI: Will the Minister of COMMERCE AND CIVIL SUPPLIES AND COOPERATION be pleased to state:

(a) whether Government have decided to allow export of much smaller quantities of sugar this year; and

(b) if so, the details and reasons therefor?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF COMMERCE AND CIVIL SUPPLIES AND COOPERATION (SHRI ARIF BEG): (a) and (b). In July, 1977 the Government had decided that during the financial year 1977-78, out of the production during the sugar year 1976-77, exports should be allowed to meet the existing firm commitments in a manner so as to minimise the losses. The total commitments to be thus fulfilled were to the extent of 1.45,000 tonnes out of which 1,20,000 was for Iran and 25,000 tonnes for EEC. During the current financial year, STC has exported 0.45 lakh tonnes valued at Rs. 10.43 crores so far, out of the quantities of sugar contracted for export during 1976-77.

**बहुमूल्य जीवन रक्षक औषधियों की तस्करी**

2336. **श्री बृजभूषण तिवारी**: क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का ध्यान 29 अक्तूबर, 1977 के 'इकानामिक टाइम्स' में प्रकाशित इस समाचार की ओर दिलाया गया है कि प्रेडिनीसोलोन, टेट्रासाइक्लीन और एनल्जीन जैसी बहुमूल्य जीवन रक्षक औषधियों की तस्करी बड़े पैमाने पर हो रही है, और

(ख) यदि हां तो इस पर सरकार की क्या प्रतिक्रिया है ?

**वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री सतीश चन्द्र अग्रवाल)**: (क) जी हां। इस आशय का एक समाचार था। परन्तु सरकार को मिली रिपोर्टों से देश में इन औषधियों के हाल ही में बड़े पैमाने पर चोरी-छिपे लाये जाने का संकेत नहीं मिलता है।

(ख) प्रश्न नहीं उठता है। फिर भी स्थिति पर सावधानीपूर्वक निगरानी रखी जा रही है।